8

आरंभिक स्तर पर उपलब्ध बाल-साहित्य एवं उसके चयन के आधार

रमेश कुमार*

बच्चा जन्म के उपरान्त ज्यों ज्यों बड़ा होता जाता है वह सुनने की कौशल विकसित करता जाता है। आरंभ में वह मामा, माँ, आदि शब्दों से शुरूआत करके धीरे-धीरे कुछ शब्दों को सुनकर अर्थ ग्रहण करता है और उस पर अपनी प्रतिक्रियाएँ भी देने लगता है। यह प्रतिक्रियाएँ शाब्दिक एवं अशाब्दिक दोनों ही रूप में हो सकती हैं। धीरे-धीरे वह बड़ा होता है और शब्दों के आगे सरल वाक्य ग्रहण की क्षमता भी विकसित कर लेता है। अब ज़रूरत होती है उसे ज़्यादा से ज़्यादा सरल वाक्यों को सुनने की जिन्हें हमारे घरों में माँ-पिता एवं अन्य सगे संबंधी पूरा कर देते हैं।

धीरे-धीरे बच्चे की उत्सुकता कथा, कहानियों, छोटे बाल सुलभ गीतों, लोरियों आदि में होती है। बच्चे की कौतुहल इस रूप में बाहर आती है कि यदि उसे यह कहा जाता है कि बेटा आओ आज तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ, बच्चा सब कुछ छोड़ कहानी सुनने के लिए आतुर हो उठता है। अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए वह तमाम सवाल करता है उसके सवाल कुछ असामान्य प्रकृति के भी हो सकते हैं परंतु वह अपनी जिज्ञासा शांत होने तक सवाल करता जाता है वास्तव में देखा जाए तो इस स्तर पर उपलब्ध बाल-साहित्य काफ़ी कम हैं और यदि उपलब्ध भी हैं तो इनकी संख्या काफ़ी कम है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा आरम्भिक साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत भारत वर्ष में उपलब्ध इस तरह के बाल सुलभ साहित्य के चयन का प्रयास किया गया। प्रारंभ में एक विज्ञापन हिंदी एवं अंग्रेज़ी के मशहूर समाचार पत्रों में दिया गया तथा उनमें बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बाल-साहित्य के बारे में बताते हुए प्रकाशकों से ऐसे बाल-साहित्य की सूची के साथ ही बाल-साहित्य की प्रतियाँ मँगायी गईं। बाल-साहित्य प्रकाशित करने वाले प्रकाशकों को एक निश्चित समयावधि के अंतर्गत अपनी हिंदी एवं अग्रेंज़ी भाषा में उपलब्ध बाल-साहित्य की 3-3 प्रतियाँ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को उपलब्ध करानी थी। जिसमें से बाल-साहित्य का चयन किया जा सके। प्रारंभ में यह गतिविधि (बाल-साहित्य चयन) दो भाषाओं में उपलब्ध थी परंतु गत वर्ष इनमें उर्दू में उपलब्ध बाल साहित्यों को भी जोड़ दिया गया। विज्ञापन के उपरान्त ढेरों की संख्या में

* डॉ. रमेश कुमार, *सहायक प्रवक्ता*, रा.शै.अ.प्र.प. नयी दिल्ली

विभिन्न प्रकाशकों द्वारा पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। निश्चित समयावधि के उपरान्त विभिन्न प्रकाशकों द्वारा उपलब्ध बाल साहित्यों की एक सूची तैयार की गई जिसमें पुस्तक का नाम, प्रकाशन वर्ष, मूल्य, प्रकाशक आदि से संबंधित सूचनाएँ संकलित की गईं। काफ़ी संख्या में किताबों के होने के कारण इस तरह की सूची में समय लगता है अत: बड़े ध्यान से तीनों हीं भाषाओं में यह सूची तैयार की गई। सूची तैयार करते समय ही कुछ किताबें जो हमारे चयन का आधार नहीं हैं उन्हें आरंभिक स्तर पर ही छाँट लिया गया जैसे कार्य पुस्तिका पाठ्य पुस्तक आदि। इसके अनन्तर बाल-साहित्य के चयन हेतु विषय विशेषज्ञों की एक सूची तैयार की गई जिसमें विषय-विशेषज्ञों द्वारा बाल-साहित्य के बाह्य एवं आतंरिक दोंनों ही पहलुओं पर खुलकर विचार किया गया। बाल-साहित्य में चयन के निम्न आधार मोटे तौर पर निर्धारित किए गए हैं —

(क) कहानी कथाओं के संदर्भ में

1. विषय वस्तु — बाल-साहित्य की संपूर्ण विषय सामग्री पर गहनता से विचार किया जाता है। जैसे – विषय वस्तु बच्चों की रुचि के अनुकूल है या नहीं, उपलब्ध सामग्री बच्चों की दुनिया से जुड़ी है, स्थानीय परिवेश का प्रतिनिधित्व करती है, क्षेत्रीय या स्थानीय लोक साहित्य की झलक है या नहीं, कल्पनाशीलता का विस्तार है, विषय वस्तु बच्चों के स्तर के अनुकूल है, विषय वस्तु में दिए गए तथ्य एवं जानकारी सही हैं या नहीं उक्त कसौटियों पर कसने के बाद ही विषय-विशेषज्ञ किसी भी पुस्तक के प्रति अपनी सटीक राय बनाते हैं।
2. भाषा — बाल-साहित्य के चयन का दूसरा आधार उसमें प्रयुक्त भाषा है। बाल-साहित्य में उपयोग में लाई गई भाषा में स्पष्टता होनी चाहिए कथा में क्रम बना रहना चाहिए, जिससे बाल पाठक जुड़ाव महसूस कर सके। भाषा सरल एवं सहज हो बच्चों के स्तरानुकूल हो। मसलन यदि कोई कहानी ब्रज के परिवेश से ली गई हो तो उसमें ब्रज भाषा के भी शब्दों का प्रयोग हो। व्याकरणिक त्रुटियाँ न हो।
3. चित्र — चित्र आरंभिक बाल-साहित्य के चयन का यह एक सबसे सशक्त पहलू है। पुस्तकों में प्रयुक्त चित्र आकर्षक होने चाहिए। चित्रों में प्रयुक्त रंग वास्तविकता को परिलक्षित करने चाहिए। चित्रों में भी कल्पना एवं वैविध्यता होनी चाहिए। चित्र विषय-वस्तु से जुड़े होने चाहिए। आवरण पृष्ठ के शीर्षक एवं चित्रों में मेल होना चाहिए। जैसे –

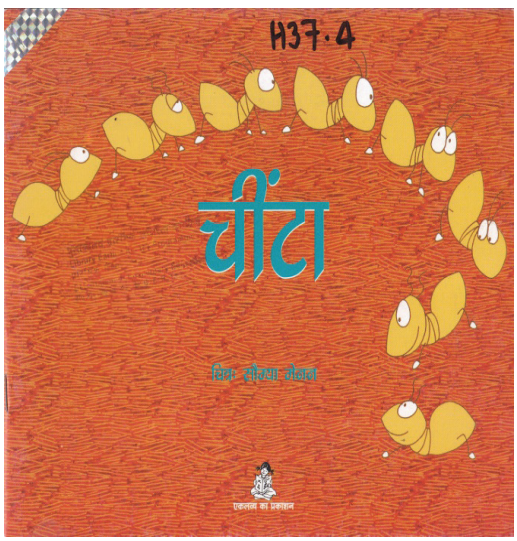

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 50 28-12-2015 AM 11:56:54

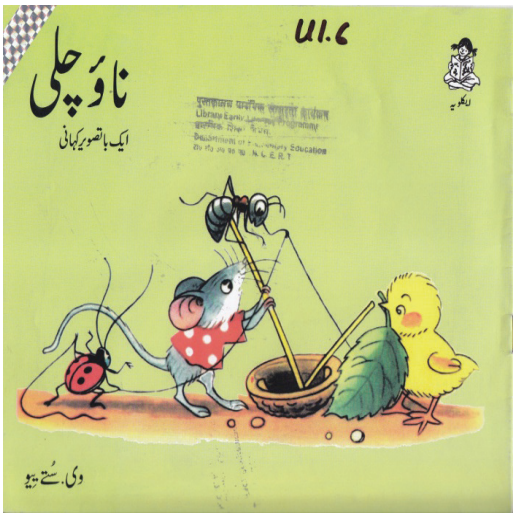

(ख) कविताओं के संदर्भ में

कविताओं में लयात्मकता होनी चाहिए इससे बच्चों का जुड़ाव कविता के प्रति बढ़ता है। कविताओं में भाषा सरल एवं स्वाभाविक होनी चाहिए। कविताओं के प्रस्तुतीकरण में विविधता होनी चाहिए। जैसे यदि कोई कविता बारिश के ऊपर लिखी गई है तो निश्चित तौर पर उस के प्रस्तुतीकरण में चित्रों के साथ बारिश की पूर्ण कल्पना सहजता से दिखनी चाहिए।

आवरण-पृष्ठ — बाल-साहित्य का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं सुसंगत होना चाहिए, शीर्षक रोचक हों एवं बच्चों को आकर्षित करते हों।शीर्षक एवं विषय वस्तु में तालमेल होना चाहिए।

उत्पादन और ले आहट — पुस्तक में प्रयुक्त कागज़ की गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए। कई बार ऐसा देखा जाता है कि पुस्तक में प्रयोग में लाया गया कागज़ इतना पतला होता है कि उसमें इंक और प्रिंट की हुई सामग्री दूसरी ओर दिखाई देती है। पुस्तक की बाइंडिंग टिकाऊ हो एवं पुस्तक में प्रयुक्त फ़ोंट साइज़ स्तरानुसार हो अर्थात छोटे स्तर के बच्चों के लिए प्रयुक्त सामग्री के फ़ोंट साइज़ अपेक्षाकृत बड़े होने चाहिए।

संपूर्ण गतिविधियों से जुड़े रहने के कारण कुछ महत्वपूर्ण बिंदु जो उभरकर सामने आए वे निम्न हैं–

1. अधिकांश बाल-साहित्य पुरानी संस्कृत कथाओं हितोपदेश, पंचतंत्र आदि से ही कथाओं को आधार लेकर बनाई गई थी।
2. कथाओं में वैविध्यता का अभाव था।
3. अधिकांश बाल-साहित्य का शीर्षक सीधे-सीधे, मूल्यों एवं उपदेशों पर आधारित था।
4. बाल-साहित्य के शीर्षक एवं पाठ्य-सामग्री में कोई तालमेल नहीं था।
5. समय एवं संदर्भ के अनुसार चित्रों का प्रस्तुतीकरण नहीं हुआ था।
6. विभिन्न विषयों से जुड़ी पाठ्य-सामग्री जैसे भूगोल से संबंधित जानकारी देते समय पृथ्वी एवं नक्शे की तस्वीर सही नहीं दी गई थी।
7. शाब्दिक त्रुटियों पर ध्यान नहीं दिया गया था।
8. कहानियों का निरर्थक विस्तार किया गया था।
9. कई कथाएँ पूर्वाग्रह से युक्त एवं संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप नहीं थीं।
10. बच्चों के लिए पशु-पक्षी संबंधी कथाओं की तो भरमार है पर बच्चों की पुस्तकों में आमतौर पर विविध पृष्ठ भूमि के बच्चों के समकालीन अनुभवों को प्रभावी रूप में और प्रामाणिकता के

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 51 28-12-2015 AM 11:56:54

साथ जगह नहीं मिल पाती। बच्चों को रूचिकर लगने वाली स्वस्थ हास्य से परिपूर्ण पुस्तकों का सर्वथा अभाव था।

11. अनेक कहानियों का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी और अंग्रेज़ी में किया गया था। कुछ पुस्तकें यद्यपि मूल भाषा में स्वीकार कर ली गईं लेकिन उनके अनुवाद (अंग्रेज़ी/हिंदी) का स्तर बहुत खराब था अत: स्वीकार नहीं की गई।
12. लोककथाओं से संबंधित बाल-साहित्य का अभाव दिखाई दिया।

बाल-साहित्य वास्तव में बच्चों की कल्पनाओं का उड़ान होती है। यदि उसमें विविधता हो तो बच्चे आनंदित होते हैं, उनकी भाषा समृद्ध होती है, उनकी सृजनशीलता को बल मिलता है जिसे बच्चे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। विभिन्न प्रकाशकों को भी इन बातों को ध्यान में रखते हुए बाल-साहित्य का प्रकाशन करना होगा क्योंकि अच्छे बाल-साहित्य तक नन्हे पाठक खुद पहुँच जाते हैं।

❑❑❑

संदर्भ

द गुड बुक्स गाईड. नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया, नयी दिल्ली।

पराशर, पंकज. 2005. बाल साहित्य– *खुद के बहाने एक बहस, शिक्षा – विमर्श*, दिगंतर, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर

पंडित, सुरेश. 2005. हिंदी में बाल साहित्य– *वस्तु स्थिति और संभावनाएँ, शिक्षा–विमर्श*, दिगंतर, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर

पांडे, लता (संपादक). 2008. *पढ़ने की दहलीज़ पर*– पढ़ने से संबंधित लेखों का संकलन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली।

प्रसाद, देवी. 2005. *शिक्षा का वाहन कला*. नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया, नयी दिल्ली।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 52 28-12-2015 AM 11:56:55